ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

बावड़ियाँ - बूँदी नगर की सांस्कृतिक विरासत

Bawdis - Cultural Heritage of Bundi Nagar

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 22/10/2021, Date of Publication: 23/10/2021

पीताम्बर दत्त शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
आस्था महाविद्यालय,
इटावा, कोटा, राजस्थान,
भारत

सुरेश चन्द्र मालव
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
आस्था महाविद्यालय,
इटावा, कोटा, राजस्थान,
भारत

सारांश

धरती की छाती को छलनी कर जिस अमृतरूपी जल की बूंद-बूंद को हम निचोड़ लेने की ठान चुके हैं, वह हमारे गले की प्यास ही नहीं बुझाता बल्कि मन की आस भी पूर्ण करता है। पंचतत्वों में से एक पानी के महत्व को पहचान कर हमारे पुरखों ने उसे जीवन की उत्सव धर्मिता से इस कदर जोड़ दिया है कि हर शुभ संस्कार में जल को निमंत्रित और अभिमंत्रित किये बिना हमारा कोई भी अनुष्ठान पूर्ण नहीं होता। जाहिर है हमारे परम्परागत जल-स्त्रोत बावड़ियों को इसलिए भी सुरक्षित रखना जरूरी है कि बावड़ियाँ हमारी सांस्कृतिक जरूरतें भी पूर्ण करती रहें।

The nectar-like water we have decided to squeeze every drop of water by sieve the chest of the earth, it not only quenches the thirst of our throat but also fulfills the hope of the mind. Recognizing the importance of water as one of the five elements, our ancestors have linked it to the festivity of life.

That no ritual is complete without inviting and inviting water in every auspicious ceremony. Obviously, it is necessary to protect our traditional water-source stepwells also because the stepwells keep fulfilling our cultural needs.

मुख्य शब्द पर्यटन, उत्सवधर्मिता, अवलोकन, सौन्दर्य, परम्परा।
Tourism, Celebration, Observation, Beauty, Tradition.

प्रस्तावना

बूँदी राज्य की जल-स्त्रोत परम्परा में बावड़ियों का महत्वपूर्ण स्थान है। पानी बूँदी राज्य के नागरिकों के दैनिक जीवन की वह धूरी है, जिस पर उनकी जिंदगी घूमती है। विभिन्न प्रकार की बावड़ियों की सुन्दरता के अवलोकन करने वाले (सौन्दर्यदृष्टा) को बून्दी नगर का पर्यटन (भ्रमण) करने की अनुशंसा की जाती है। बूँदी के शाही परिवार तथा रचनात्मक एवं जनहित कार्यों में रूचि रखने वाले नागरिकों द्वारा कई बावड़ियांे का निर्माण करवाया गया। बूँदी राज्य की हस्तनिर्मित बावड़ियाँ स्थापत्य एवं निर्माण के विशिष्ट सौन्दर्य को प्रदर्शित करती हैं। प्राचीन हिन्दू ग्रंथ बहुत ही उच्च श्रेणी के उन लोगों के उच्च गुणों का वर्णन करते हैं, जिन्होंने अपनी सुविधा के लिए बावड़ियाँ बनाकर लोगों की सेवा की। बावड़ियों का निर्माण - उदारता तथा दयालुता व सहयोग भावना के रूप में माना जाता है। वैदिक साहित्य में वर्णित सूत्र के अनुसार बावड़ियों का निर्माण प्रकट करता है कि 10 कुएँ एक बावड़ी के समान, 10 बावड़ियाँ एक तालाब के समान तथा 10 तालाब एक पुत्र के समान और 10 पुत्र एक वृक्ष के समान होते हैं।[1]

उदयपुर संग्रहालय में विद्यमान सिक्के भी यह प्रमाणित करते हैं कि लोगों के द्वारा पदयात्रियों के लिए बावड़ियों और विश्रामगृहों का निर्माण करवाया जाता था।2 मध्यकालीन समय में यह परम्परा थी कि राजमाता अपनी जागीर से प्राप्त राजस्व में से बावड़ियों का निर्माण करवाती थीं। बूँदी राज्य में अधिकांश बावड़ियाँ मंदिर व पवित्र स्थलों के निकट बनाई, जहाँ भक्त अपने आपको पवित्र करने के लिए स्नान कर सकते थे। बावड़ियों के दोनों और विश्राम कक्षों में प्रवेशद्वार पर दीवारों पर आलियों में गणेश, हनुमान, दुर्गा व महिषासुर आदि की मूर्तियों की स्थापना की है, आज भी जब कोई पानी लेने जाता है तो पहले वह विनम्रता से देवता के समाने झुकता है, बाद में आगे बढ़ता है। मूर्तियों की स्थापना जन समुदाय की जल वितरण के सुरक्षित संग्रहण के महत्व को प्रकट करती है। ठहरने के स्थानों पर प्रायः बावड़ियों का निर्माण किया जाता था। लम्बी यात्राओं पर प्रायः बावड़ियों का निर्माण किया जाता था। लम्बी यात्राओं के दौरान लोग मार्ग में बावड़ियों पर रुकते तथा स्नान करते थे व भोजन बनाते थे। ईश्वर की पूजा करते थे, विश्राम करते थे तथा पुनः यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस प्रकार थके-मांदे यात्रियों के लिए बावड़ियाँ विश्रामगृह का कार्य करती थीं।

बूँदी राज्यान्तर्गत गर्मी से राहत पाने के लिए लोग इन जल-स्त्रोतों पर गर्मियों में एकत्रित होते थे तथा इन दिनों में ये बहुत ही आदर्श विश्राम स्थल होते थे। यहाँ पर चैपड़, चंगापो तथा ताश आदि खेल खेले जाते थे। सायंकालीन समय में यह स्थल भंाग ठण्डाई की गोठ स्थल बन जाते थे तथा मनोरंजन क्लबों के रूप में इनका उपयोग होता था। बावड़ियों का निर्माण शिकार हेतु सुरक्षित स्थल के रूप में, जिन्हें शिकारगाह के नाम से पुकारते हैं, वहाँ आने वाले शिकारियों को सुविधा प्रदान करने हेतु भी कराया गया था।3 बावड़ियों का उपयोग दाह संस्कार के पश्चात् स्नान करने के लिए भी किया जाता था। इसलिए यह प्रामाणिक है कि बावड़ियाँ सामाजिक गतिविधियों की एक महत्वपूर्ण कड़ी थीं।

बावड़ियों के आकार-प्रकार व रचना एक राज्य से दूसरे राज्य में भिन्न होती थी। यह भिन्नता प्राकृतिक वातावरण, भूमि के प्रकार, वर्षा की मात्रा और भूमिगत जल स्तर पर निर्भर करती थी।

बावड़ियाँ आम तौर पर पृथ्वी की सतह के समानान्तर कुएँ के रूप में होती हैं, जिनसे सिंचाई व पीने के लिए पानी खींचा जाता है तथा सीढ़ियाँ, जो पानी तक, विश्राम कक्षों तक और कमरों में खुलने वाले तंग मार्ग तक पहुँचती हैं। बावड़ियों की डिजाइनों में भिन्नता उनको बनवाने वाले लोगों के संसाधनों व स्तर के कारण होती है।

बूँदी राज्य वैसे तो बावड़ियों से समृद्ध रहा है और बात यदि बूँदी राज्य की राजधानी बूँदी शहर की करें तो शहर की प्रत्येक गली में कहीं न कहीं जीर्ण-शीर्ष अवस्था में बावड़ियाँ दिखाई पड़ जाती हैं। शहर की कुछ कलात्मक बावड़ियों का उल्लेख निम्नानुसार किया जा सकता है।

रानीजी की बावड़ी, बूँदी नगर

हाड़ौती की प्राचीन राजधानी बूँदी के दक्षिणी छोर पर चैगान दरवाजे के बाहर प्रसिद्ध रानीजी की बावड़ी स्थित है। इसका निर्माण बूँदी नरेश अनिरूद्ध सिंह की विधवा रानी लाड कुंवरी जी नाथावती ने 1700 ई. में अपने पुत्र बुद्धसिंह के शासनकाल में करवाया था। लाड कुंवरी फतेह सिंह जी की पोती तथा जसवन्त सिंह जी की पुत्री[4] तथा नमाना के सोलंकी सरदार यशवन्द सिंह जी की दुहिता थी।[5] 125 फीट गहराई अपने में समेटे हुए ऐतिहासिक बावड़ी का क्षेत्रफल 9680 वर्ग फीट है। बावड़ी का मुख्य प्रवेश द्वार पश्चिमाभिमुखी है, जिसके दोनों ओर 16 फीट ऊँची दो छतरियाँ हैं, इन छतरियों की विशेषता यह है कि प्रत्येक छतरी 12 स्तम्भों पर टिकी हुई है। बायीं छतरी के नीचे प्रवेशद्वार पर एक आलिये में बतख पर आरूढ़ सरस्वती को हाथ में वीणा लिए दर्शाया गया है। मूर्ति बड़ी ही सजीव जान पड़ती है। बतख के आगे एक सेविका पात्र में कोई खाद्य पदार्थ लिए दर्शायी गई है तथा बतख के पीछे एक जल की दात्री देवी के महत्व को मध्यनजर रखते हुए स्थापित किया गया है। प्रवेश द्वार के दायीं ओर एक अन्य आलिये में चतुर्भुजी गणपति की प्रतिमा स्थापित है, जिनको कार्य सिद्ध के देवता मानकर स्थापित किया गया है। बूँदी राज्य की जनता में यह एक अनूठी परम्परा रही है कि जब भी कोई व्यक्ति बावड़ी में पानी लेने के लिए जाता है तो सर्वप्रथम विनम्रता से इन देवताओं के सामने झुकता है, इसके उपरान्त बावड़ी में प्रवेश करता है।

बावड़ी में प्रवेश करने के लिए दो अन्य लघु प्रवेश द्वार उत्तर व दक्षिणी दिशा में स्थित है। प्रवेश द्वारों के ऊपर 16 फीट ऊँची 8-8 स्तम्भों पर टिकी हुई दो छतरियाँ स्थित है। इनका उपयोग सदियों से जनता के लिए विश्राम स्थल के रूप में होता आ रहा है।

बावड़ी में नीचे की ओर जाने के लिए असंख्य सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। सीढ़ियों के नीचे उतरने पर 8 कलात्मक स्तम्भ दिखाई पढ़ते है, जिनके शीर्ष भाग पर घुमावदार सूँड वाले उकेरे हाथियों पर आभूषणयुक्त अत्यधिक सौन्दर्यता ऐसी प्रतीत होती है जैसे वे बावड़ी में पानी लेकर अपनी प्यास बुझाने जा रहे हैं।[5] जैसे ही आगे बढ़ेंगे तो आपको गणेश, सरस्वती तथा नृसिंह, मत्स्य व वराह के समान रूप ग्रहण करती आकृतियाँ अपना ध्यान आकर्षित करेंगी। यद्यपि समयान्तराल से यह क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। बावड़ी का तोरण द्वार अति सुन्दर स्थापत्य कला की पूर्णता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। छैनी से उकेरे गये नाजुक आकर्षक मेहराब इस बावड़ी की सुन्दरता एवं महानता में चार-चाँद लगाते हैं तथा इसे बावड़ियों की स्थापत्य कला के सर्वोत्तम आदर्श (नमूने) के रूप में प्रस्तुत करते हैं। बावड़ी के शिलालेखों से विदित होता है कि इस बावड़ी का निर्माण रानी लाडकुँवरी जी ने जनकल्याण के लिए करवाया था। पेयजल उपयोग, पर्यटन, धर्म एवं पुरातत्व की दृष्टि से यह बावड़ी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तुशास्त्र के अनुसार एक श्रेष्ठ बावड़ी के लिए जो विशेषताएँ होती हैं उन समस्त विशेषताओं को यह बावड़ी अपने में समेटे हुए है।

भावलदेवी बावड़ी, बूँदी नगर

भावलदेवी बावड़ी वीर रसावतार महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की हवेली के सामने स्थित है। इसका निर्माण महाराव राजा भावसिंह की रानी भावलदेवी ने प्रजा के कल्याण के लिए 1677 ई. में करवाया था।[6] इस प्रकार यह प्राचीन बावड़ी चैगान में स्थित रानीजी की बावड़ी से 23 वर्ष पूर्व अपने अस्तित्व में आ चुकी थी। भावलदेवी प्रतापगढ़ नरेश हरिसिंह की दुहिता थी।[7] यह बावड़ी 155 फीट लम्बी व 22 फीट 5 इंच चैड़ी है, जिसकी गहराई 65 फीट है। दक्षिणाभिमुखी यह बावड़ी अंग्रेजी के लेटर 'एल' के आकार की है, जिसके दोनों ओर सीढ़ियाँ हैं जो 90 डिग्री के कोण पर पानी तक घूमती हैं। सीढ़ियाँ जमीन की सतह से पानी तक जाती हैं, जो ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे कोई नीचे गुफा में जा रहा हो। सीढ़ियों का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि पानी तक पहुँच सहज हो सके। बावड़ी में दायीं ओर गणपति तथा बायीं ओर सरस्वती की आकर्षक प्रतिमाएँ हैं। बावड़ी में प्रवेश करने पर एक विशाल कलात्मक मेहराब दिखाई पड़ती है। इतनी विशाल मेहराब बूँदी की अन्य बावड़ियों में दिखाई नहीं पड़ती है। बावड़ी के शीर्ष पर चार छतरियाँ तथा सूर्यमल्ल मिश्रण के नाम से एक प्राचीन पुस्तकालय स्थित है। बावड़ी के अन्दर प्रवेश करने पर तीन दरवाजे व असंख्य सीढ़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि बावड़ी कलात्मक नहीं है किन्तु दीवारों पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा ऐरावत हाथी पर आरूढ़ इन्द्र की प्रतिमा बड़ी ही आकर्षक व कलात्मक है। शिलालेख से ज्ञात होता है कि बावड़ी का निर्माण प्रारम्भ करने से पूर्व शुभ मुहुर्त देखा जाता था। साथ ही विधिपूर्वक गणपति की आराधना व पूजा की जाती थी, जिसका उद्देश्य यह होता था कि निर्माण कार्य में किसी प्रकार की कोई बाधा न आवे।[7]

अध्ययन का उद्देश्य

उपरोक्त अध्ययन का उद्देश्य जहाँ एक ओर प्राचीन जल-स्त्रोतों के रूप में नष्ट हो रही इन ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर बावड़ियों को नष्ट होने से बचाने के लिए जनता को जागरूक करना है तो वहीं दूसरी ओर इन बावड़ियों का उचित प्रबन्धन कर भूमिगत जल भराव क्षमता को बढ़ाकर तेजगति से बढ़ रही जनसंख्या के लिए शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना है, जिससे कि पानी की किल्लत से जूझ रही सरकार को न केवल मुक्ति मिल सके बल्कि इस क्षेत्र में खर्च हो रहे सरकारी धन को भी बचाया जा सके।

निष्कर्ष

पृथ्वी पर प्राकृतिक अनुपात से पेयजल यथेष्ट मात्रा में मौजूद रहा किन्तु संसाधनों के अनियोजित दोहन और परम्परागत जल-स्त्रोतों की उपेक्षा ने आज मनुष्य को इस विषम स्थिति में पहुँचा दिया है कि बावड़ियों के नगर बूँदी में भी जनता प्यासी है। पूर्वजों से विरासत में मिली जल प्रबन्ध की बेहतर व्यवस्था की उपेक्षा के दुष्परिणाम मुह-बाये खड़े हैं। पारम्परिक जल प्रबन्ध से जुड़ी बावड़ियाँ मनुष्य के पेयजल के अलावा दैनिक जीवन की तमाम जरूरतें पूरी करने के साथ भूमि का जल स्तर भी बढ़ाती थीं। शहरी पीढ़ियाँ भले ही आराम तलब जिंदगी के चलते बावड़ियों के महत्व को भूल रही हों, पर हमारे पुरखों ने पानी के प्रबंधन का जो लाजवाब तरीका निकाला था, उसकी महत्ता आज भी उसी शिद्दतता से कायम है। दुर्भिक्ष के समय भी ये पराम्परागत जल-स्त्रोत ही हमारे शरणगाह बनते हैं। समय आ गया है कि हम इन जल-स्त्रोतों के महत्व को समझें। जन-जन को समझाएँ और पानी के साथ संस्कृति के इन रखवालों को भी बचाएँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. सूरज जिद्दी एवं विष्णु बहादुर, "राजस्थान की बावड़ियाँ", प्रकाशक पर्यटन विभाग कला एवं संस्कृति, राजस्थान सरकार, मार्च 1998, पृ.-4*
2. *वही, पृ.-5*
3. *वही, पृ.-7*
4. *रानीजी की बावड़ी का शिलालेख*
5. *लज्जा राम मेहता, "पराक्रमी हाडा राव", श्री वेंकटेश्वर स्टीम मुद्रणालय, बम्बई, 1915, पृ.-275*
6. *भावलदेवी बावड़ी का शिलालेख*
7. *लज्जा राम मेहता, "पराक्रमी हाडा राव", श्री वेंकटेश्वर स्टीम मुद्रणालय, बम्बई, 1915, पृ.-116*